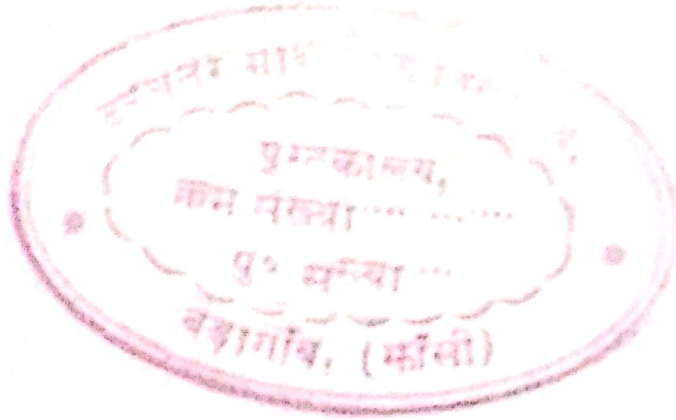


51

जहांदारशाह



हि. २०८५
९५३९

वृन्दावनलाल वर्मा

मयूर प्रकाशन, झाँसी ।

प्रकाशक :

सत्यदेव वर्मा, बी. ए. एल-एल. बी.

मयूर प्रकाशन भाँसी

द्वितीय संस्करण-१९५५

तृतीय संस्करण-१९५८

चतुर्थ संस्करण-१९६३

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

मूल्य ।।।)

मुद्रक:—

रामसेवक खड़ग,

स्वाधीन प्रेस, भाँसी ।

नाटक के पात्र

पुरुष—

जहांदारशाह—दिल्ली का बादशाह;

(२६-३-१७१२ से ११-२-१७१३ तक)

जुलफिकार—जहांदारशाह का वजीर

सरदार, गायक, वादक, सिपाही, दरवारी, गाड़ीवान,

शराब का दूकानदार, कुंजड़े, लड़के,

भीड़ के लोग इत्यादि ।

स्त्री—

लालकुंवर—असली नाम इमतियाज महल बेगम,

जहांदारशाह की रखेली वेश्या ।

जुहरा—कुंजड़ी

कुंजड़ों, नर्तकियां इत्यादि ।

डा० वृन्दावनलाल वर्मा-साहित्य

उपन्यास	
भांसी की रानी	
लक्ष्मीबाई	६)
माधव जी सिन्धिया	६)
मृगनयनी	५)
अमरबेल	५)
कचनार	४।।)
दूटे कटे	४।)
गडकुण्डार	४)
बिराटा की पत्थिनी	४)
भुवन विक्रम	३।।)
प्रचल मेरा कोई	३।।।)
सोना	३)
आहत	३)
अत्याबाई	२।)
कुण्डली चक्र	२।)
संगम	२।)
उदय किरण	२)
रामगढ़ की रानी	२)
प्रत्यागत	१।।)
मुसाहिव बू	१।।)
प्रेम की भेंट	१।)
लगन	१।)
कभी न कभी	१।)
कहानी संग्रह	
दबेपांव	२)
ऐतिहासिक कहानियां	१)
शरणागत	१।)
कलाकार का दण्ड	१।)
१८५७ के अमरवीर	१)

वर्मा जी को
उनके
अमर साहित्य पर
भारत सरकार
उत्तर प्रदेश राज्य
म० प्र० राज्य
तथा
साहित्यकार-संसद
हिन्दुस्तानी एकेडेमी
नागरी प्रचारिणी सभा
के
सर्व श्रेष्ठ पुरस्कार
भेंट किये जा
चुके हैं।

मैंडकी का ब्याह	१
संगुटी का दान	१।
रश्मि समूह	१
तोपी	।।।

नाटक	
भांसी की रानी	२
हंस मयूर	२।
पूर्व की ओर	२।
ललितविक्रम	१।।।
राखी की लाज	१।
केवट	१।
खिलौने की खोज	१।
नीलकण्ठ	१।
वीरबल	१।
फूलों की बोली	१।
बांस की फांस	१।
निस्तार	१
मंगलसूत्र	१
देखा देखी	।।।=

एकाङ्की

कनेर	१
काश्मीर का कांटा	१
लो भाई पंचो लो	।।।
पीले हाथ	।।।
जहांदारशाह	।।।
सगुन	।।।

स्फुट

बुन्देलखण्ड के लोकगीत ।।

प्राप्ति स्थान

मयूर प्रकाशन भांसी

